चतुर्थ अध्याय

11119CH04

महाकाव्य

लौकिक संस्कृत भाषा में काव्य-रचना का आरम्भ वाल्मीकि से हुआ। वाल्मीकि को मधुर उक्तियों का मार्गदर्शी महर्षि कहा गया है। विषय का अलंकृत वर्णन, सरल एवं मनोरम पदों से आकर्षक अर्थों की अभिव्यक्ति की रीति वाल्मीकि ने ही दिखाई। उन्होंने राम को नायक बनाकर आदिकाव्य प्रस्तुत किया। वाल्मीकि द्वारा अपनाई गई काव्य पद्धति कुछ काल तक सर्गबन्ध रचना नाम से प्रचलित रही, बाद में इसे महाकाव्य कहा गया। संस्कृत भाषा में कई महाकाव्यों की रचना के बाद उनके लक्षणों का निरूपण काव्यशास्त्रियों ने किया। भामह, दण्डी आदि आचार्यों के अनुसार महाकाव्य का जो लक्षण निश्चित किया है, वह इस प्रकार है—

महाकाव्य सर्गों में बँधा होता है। इसका नायक कोई देवता या उदात्त गुणों से युक्त उच्च कुल में उत्पन्न क्षत्रिय राजा होता है। कभी-कभी एक ही वंश में उत्पन्न अनेक राजा भी इसके नायक हो सकते हैं, जैसा कि कालिदास के रघुवंश में है। महाकाव्य में शृङ्गार, वीर और शान्त इन तीन रसों में से कोई एक प्रधान रस होता है। अन्य रस भी सहायक के रूप में आते हैं। नाटकों में स्वीकृत कथावस्तु की सन्धियों के समान महाकाव्य में भी कथावस्तु के स्वाभाविक विकास हेतु मुख, प्रतिमुख आदि सन्धियों का प्रयोग होता है।। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में से कोई एक पुरुषार्थ महाकाव्य के उद्देश्य के रूप में होता है। इसके आरम्भ में नमस्कार, आशीर्वचन अथवा मुख्य कथा का सूचक मंगलाचरण होता है। इसमें कहीं दुष्टों की निन्दा और कहीं सज्जनों की प्रशंसा होती है।

महाकाव्य में सर्गों की संख्या आठ से अधिक होती है। एक सर्ग में प्राय: एक ही छन्द का प्रयोग होता है। उसके अन्त में छन्द का परिवर्तन किया जाता है। सर्ग के अंत में भावी कथा की सूचना दी जाती है। महाकाव्य में सन्ध्या, सूर्य, चन्द्र, रात्रि, प्रभात, आखेट, ऋतु, पर्वत, वन, समुद्र, संयोग, वियोग, मुनि, राजा, यज्ञ, युद्ध, यात्रा, विवाह, मन्त्रणा आदि

© NCERT not to be republished

का अवसर के अनुकूल वर्णन होता है। महाकाव्य का नामकरण कवि, कथानक, नायक आदि के आधार पर होता है।

संस्कृत महाकाव्यों के विकास-क्रम में क्रमश: कालिदास, अश्वघोष, भारवि, भट्टि, माघ, कुमारदास तथा श्रीहर्ष के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं। इनकी रचनाएँ महाकाव्य-साहित्य में अमर हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है—

कालिदास

संस्कृत कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। इन्हें परवर्ती कवियों ने कविकुल-गुरु की उपाधि दी है। उन्होंने दो महाकाव्य *(कुमारसम्भव तथा रघुवंश),* दो खण्डकाव्य *(ऋतुसंहार तथा मेघदूत)* और तीन नाटक *(विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र* तथा *अभिज्ञानशाकुन्तल)* लिखे हैं।

दुर्भाग्यवश कालिदास का काल निश्चित नहीं है। कुछ लोग इनका काल प्रथम शताब्दी ई. पू. में मानते हैं, तो दूसरे लोग इन्हें गुप्तवंश के चन्द्रगुप्त द्वितीय का समकालिक सिद्ध करते हैं। कालिदास ने अपने काव्यों में वाल्मीकि की शैली को स्वीकार किया है। इस महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में दिलीप की गो-सेवा, चतुर्थ सर्ग में रघु की दिग्विजय यात्रा, षष्ठ सर्ग में इन्दुमती का स्वयंवर एवं त्रयोदश सर्ग में राम का अयोध्या लौटना वर्णित है। ये *रघुवंश* के उत्तम स्थल हैं। *रघुवंश* के अन्तिम (उन्नीसवें) सर्ग में राजा अग्निवर्ण के विलासमय जीवन का चित्र खींचा गया है और रघुकुल का पतन दिखाया गया है। *रघुवंश* गृहस्थ जीवन का समर्थन करता है और रघुवंशी राजाओं के उच्च आदर्शों का प्रतिपादक है।

इन दोनों महाकाव्यों में कालिदास ने वैदर्भी रीति का प्रयोग किया है और उनमें सभी रसों को प्रकाशित करने की क्षमता वाला प्रसाद गुण विद्यमान है।

अश्वघोष

अश्वघोष के दो महाकाव्य हैं *बुद्धचरित* और *सौन्दरनन्द*। इनका समय प्रथम शताब्दी ई. है। ये कुषाणवंश के राजा कनिष्क के समकालिक थे। अश्वघोष मूलत: अयोध्या के रहने वाले ब्राह्मण थे, जो बाद में बौद्ध बन गए थे। ये बहुत बड़े आचार्य और वक्ता थे। इन्होंने इन दो महाकाव्यों के अतिरिक्त एक नाटक *(शारिपुत्र-प्रकरण)* भी लिखा था, जो खण्डित रूप में मध्य एशिया से प्राप्त हुआ है।

© NCERT not to be republished
2024-25

- **बुद्धचरित** — यह भगवान् बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन करता है। इसमें मूलत: 28 सर्ग थे, किन्तु आज इसके प्रथम चौदह सर्ग ही उपलब्ध हैं। वैसे पूरे महाकाव्य के तिब्बती और चीनी भाषा में अनुवाद भी हो चुके थे, जो उपलब्ध हैं। *बुद्धचरित* पर *रामायण* का बहुत अधिक प्रभाव है। इसके कई दृश्य *रामायण* से समता रखते हैं। घटनाओं का चयन तथा आयोजन करने में अश्वघोष अधिक प्रभाव डालते हैं। बौद्ध होते हुए भी प्राचीन वैदिक परम्पराओं के प्रति उनमें गहन निष्ठा है। *बुद्धचरित* के पूर्वार्द्ध में बुद्ध के निर्वाण तक का वर्णन है। शेष भाग में उनके उपदेशों तथा उत्तरकालिक जीवन का चित्रण है।
- **सौन्दरनन्द** — यह अश्वघोष का दूसरा महाकाव्य है, जिसमें 18 सर्ग हैं। इसमें बुद्ध के सौतेले भाई नन्द की धर्मदीक्षा का वर्णन है। इस महाकाव्य के आरम्भिक भाग में कवि ने नन्द और उसकी पत्नी सुन्दरी के परस्पर अनुराग को शृंगार रस के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

नन्द के बुद्ध के विहार में चले जाने पर दोनों की विरह-व्यथा का पृथक्-पृथक् वर्णन किया गया है। नन्द के मानसिक संघर्ष का चित्रण करने में कवि ने पूर्ण सफलता पाई है। बौद्ध धर्म के उपदेशों का अत्यन्त रोचक उपमाओं के द्वारा इसमें प्रतिपादन किया गया है। जो नन्द काम में आसक्त था, वही धर्मोपदेशक बन जाता है। अश्वघोष के दोनों महाकाव्य वैदर्भी रीति में लिखे गए हैं। उनमें अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से है। अश्वघोष ने बौद्धधर्म के उपदेशों को काव्य का रूप देकर प्रस्तुत किया है, जिससे लोग संन्यास-धर्म के प्रति प्रवृत्त हों। भोग के प्रति अनासक्ति और संसार की असारता दिखाने में कवि को पूरी सफलता मिली है।

भारवि

भारवि ने संस्कृत महाकाव्य को एक नई दिशा दी। इनके पहले के कवि कथावस्तु के विकास पर अधिक ध्यान देते थे, वर्णनों पर कम। भारवि ने कथानक से अधिक सम्बद्ध वस्तु के वर्णन-वैचित्र्य को महत्त्व दिया। महाकाव्य की इस पद्धति को अलंकृत पद्धति या विचित्र मार्ग कहा गया है।

भारवि का काल 500 ई. से 600 ई. के बीच माना गया है। ऐहोल अभिलेख (634 ई.) में भारवि का नाम कालिदास के साथ लिया गया है। उस समय तक ये प्रसिद्ध कवि हो गए थे।

© NCERT not to be republished

- **किरातार्जुनीय** — यह भारवि की एकमात्र रचना है। इसमें 18 सर्ग हैं। इन्द्रकील पर्वत पर दिव्य अस्त्र प्राप्त करने वाले अर्जुन और किरातवेशधारी भगवान् शंकर का युद्ध इस काव्य में मुख्य रूप से वर्णित है। भगवान् शंकर ने प्रसन्न होकर अर्जुन को दिव्य अस्त्र प्रदान किया। इसका कथानक बहुत छोटा है, किन्तु भारवि की वर्णन पद्धति से इस महाकाव्य को विस्तार मिला है। चतुर्थ से एकादश सर्ग तक कवि ने ऋतु, पर्वत, अप्सराओं की क्रीड़ा, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि का विस्तृत वर्णन किया है, जिसमें अलंकरण और कल्पना का आधिक्य है तथा स्वाभाविकता का अभाव है। भारवि का अर्थ-गौरव प्रसिद्ध है। इनके श्लोकों में बहुत से ऐसे अंश हैं, जो नीति-वाक्य या लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हैं, जैसे— **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** (ऐसी बातें दुर्लभ होती हैं, जो हितकर भी हों और मनोहर भी), **सहसा विदधीत न क्रियाम्** (कोई कार्य सहसा नहीं करना चाहिए) इत्यादि। भारवि ने चित्र काव्य का पर्याप्त प्रयोग किया है। कहीं एक ही व्यञ्जन से बना श्लोक है, तो कहीं दो व्यञ्जनों से। इस रचना में भारवि ने पाण्डित्य का प्रदर्शन किया है। इसलिए भारवि की कविता को नारियल के फल के समान कहा गया है, जो ऊपर से रूक्ष है, किन्तु भीतर से सरस है।

भट्टि

अपने काव्य में व्याकरण के नियमों का प्रयोग कर भट्टि ने संस्कृत शास्त्रकाव्य-परम्परा का आरम्भ किया। वे काव्य के द्वारा सरलता से व्याकरण सिखाते हैं। उन्होंने अपना यह काव्य वलभी नगरी (गुजरात) में श्रीधरसेन नामक राजा के संरक्षण में लिखा है। श्रीधरसेन नाम के चार राजा 500 ई. से 650 ई. के बीच हुए। अत: भट्टि का समय अधिक से अधिक 650 ई. तक हो सकता है। सामान्यत: विद्वानों ने इनका समय छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध एवं सातवीं शताब्दी के आरंभ में माना है।

- **रावणवध** या **भट्टिकाव्य** — इनका *रावणवध* या *भट्टिकाव्य* 22 सर्गों में निबद्ध है। इसमें *रामायण* की कथा सरल तथा संक्षिप्त रूप से वर्णित है। मनोरञ्जन के साथ संस्कृत व्याकरण का पूर्ण ज्ञान देना इस महाकाव्य का उद्देश्य है। भट्टि ने कहा है कि व्याकरण की आँख रखने वालों के लिए यह काव्य दीपक के समान है। व्याकरण के अतिरिक्त अलंकारशास्त्र के ज्ञान का भी प्रदर्शन भट्टि ने इस महाकाव्य में किया है।

2024-25

कुमारदास

कुमारदास का समय छठी शताब्दी माना जाता है। कुछ लोग इन्हें आठवीं शताब्दी का भी मानते हैं। इनका जन्मस्थान सिंहल द्वीप (श्रीलंका) है।

- **जानकीहरण** — *जानकीहरण* कुमारदास द्वारा 20 सर्गों में रचित राम की कथा पर आश्रित महाकाव्य है। कालिदास के रघुवंश का अनुकरण इन्होंने अपने महाकाव्य में किया है। राजशेखर ने इनकी प्रशंसा में कहा है—

जानकीहरणं कर्तुं रघुवंशे स्थिते सति।
कविः कुमारदासश्च रावणश्च यदि क्षमः।।

रघुवंश (इस नाम का महाकाव्य, रघुवंशी राजा) के रहते हुए जानकीहरण (इस नाम का महाकाव्य, सीताहरण) करने की क्षमता यदि किसी में है, तो वह कुमारदास में है या रावण में।

जानकीहरण महाकाव्य अपने शीर्षक से केवल सीताहरण से सम्बद्ध प्रतीत होता है, किन्तु इसमें राम के जन्म से लेकर अभिषेक तक की पूरी कथा है।

माघ

माघ राजस्थान के भीनमाल या श्रीमाल नगर के निवासी थे। इनके पितामह वहाँ के राजा के प्रधानमंत्री थे। इनका समय 700 ई. माना जाता है। माघ की एकमात्र रचना *शिशुपालवध* महाकाव्य है। माघ इस काव्य की रचना में भारवि और भट्टि से बहुत प्रभावित हैं। भारवि से प्रतिस्पर्धा तो उनके महाकाव्य में प्रारम्भ से अन्त तक दिखाई पड़ती है। भारवि शिव का यशोगान करते हैं, तो माघ विष्णु का। माघ अलङ्कृत काव्य रचना में भारवि से आगे बढ़ गए हैं।

- **शिशुपालवध** — *शिशुपालवध* 20 सर्गों का उत्कृष्ट महाकाव्य है, जिसमें कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा वर्णित है। छोटे कथानक को माघ ने महाकाव्य में विस्तृत वर्णनों से बहुत बड़ा बना दिया है। व्याकरण, राजनीति, वेद, दर्शन, संगीत आदि विविध शास्त्रों के अपने ज्ञान को माघ ने इसमें प्रदर्शित किया है। इस महाकाव्य को लिखने में माघ का ऐसा उद्देश्य प्रतीत होता है कि महाकाव्य के छोटे से छोटे लक्षण को समाविष्ट करके इसे आदर्श महाकाव्य का रूप दिया जा सके। भाषा और छन्द दोनों पर माघ का अद्भुत अधिकार है। भारवि के समान इन्होंने चित्रकाव्य का

2024-25

भी प्रयोग किया है। इस महाकाव्य को पण्डितों के समाज में बहुत प्रशंसा मिली है जिसका प्रमाण यह सुभाषित है— मेघे माघे गतं वय:।

श्रीहर्ष

यद्यपि माघ के बाद अन्य अनेक कवि हुए, किन्तु श्रीहर्ष को जो ख्याति मिली, वह अन्य किसी को नहीं मिली। श्रीहर्ष विशिष्ट पण्डित-परम्परा में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने *नैषधीयचरित* महाकाव्य के अतिरिक्त वेदान्त का एक क्लिष्ट ग्रन्थ *खण्डनखण्डखाद्य* भी लिखा था। इनकी शैली पाण्डित्य से भरी हुई है। माघ के समान श्रीहर्ष भी पाण्डित्य-प्रदर्शन करते हैं, किन्तु पदों का लालित्य भी सर्वत्र बनाए रखते हैं।

श्रीहर्ष का समय बारहवीं शताब्दी है। ये कान्यकुब्जनरेश जयचन्द्र की सभा में रहते थे। श्रीहर्ष ने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनकी सूचना उन्होंने *नैषधीयचरित* के सर्गों के अन्त में दी है।

- **नैषधीयचरित** — *नैषधीयचरित* में निषध देश के राजा नल के जीवन का वर्णन है। नल और दमयन्ती के परस्पर प्रेम तथा विवाह की संक्षिप्त कथा को कल्पनाशक्ति के सहारे श्रीहर्ष ने 22 सर्गों में फैलाया है। उनके प्रेम में हंस तथा देवता बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। *नैषधीयचरित* में श्रीहर्ष ने अपने प्रौढ़ पाण्डित्य का इतना अधिक प्रदर्शन किया है कि यह शास्त्र-काव्य बन गया है। साधारण संस्कृतज्ञ इसके साथ खिलवाड़ नहीं कर सकते। विद्वानों के गर्वरूपी रोग को दूर करने के लिए यह औषध माना गया है *(नैषधं विद्वद्दौषधम्)।* इस महाकाव्य को भारवि और माघ के काव्यों से भी उत्कृष्ट कहा गया है—

तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदय:।
उदिते नैषधे काव्ये क्व माघ: क्व च भारवि:।।

अर्थात् भारवि की शोभा तब तक है, जब तक माघ का उदय नहीं हुआ और जब नैषध काव्य का उदय हो गया, तो कहाँ माघ और कहाँ भारवि?

भारवि, माघ और श्रीहर्ष इन तीनों के महाकाव्यों *(किरातार्जुनीय, शिशुपालवध,* और *नैषधीयचरित)* को संस्कृत विद्वान् *बृहत्त्रयी* कहते हैं। इन तीनों ने अलंकृत पद्धति का अनुसरण किया है। कालिदास के तीन काव्यों *(रघुवंश, कुमारसम्भव* और *मेघदूत)* को सरल शैली का आश्रय लेने के कारण *लघुत्रयी* कहा जाता है। इन छ: काव्यों का संस्कृत परम्परा में विशेष रूप से प्रचार है।

अन्य महाकाव्य

संस्कृत भाषा में महाकाव्य-रचना बहुत लोकप्रिय रही है। उपर्युक्त महाकाव्यों के अतिरिक्त प्राचीन काल में भी अनेक महाकाव्य लिखे गए थे और यह परम्परा आज तक चली आ रही है। यहाँ कुछ महाकाव्यों के नाम दिए जाते हैं। *हरविजय* नामक महाकाव्य कश्मीरी कवि रत्नाकर द्वारा लिखा गया, जिसका समय 850 ई. माना जाता है। इस महाकाव्य में भगवान् शिव की अन्धकासुर पर विजय का विस्तार से वर्णन है। इसमें 50 सर्ग हैं। महाकाव्य की विशालता के कारण रत्नाकर की कीर्ति बहुत फैल गईं। रत्नाकर के समकालीन शिवस्वामी ने बौद्धग्रन्थ अवदानशतक की एक कथा पर आश्रित *कप्फणाभ्युदय* नामक महाकाव्य लिखा। यह 20 सर्गों का बौद्ध महाकाव्य है। कश्मीर के ही निवासी क्षेमेन्द्र ने तीन प्रसिद्ध महाकाव्यों का प्रणयन किया। ये हैं— *रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी* और *बृहत्कथामञ्जरी*। ये तीनों प्रसिद्ध कथाओं पर आश्रित हैं। क्षेमेन्द्र ने 1067 ई. में अपना अन्तिम महाकाव्य *दशावतारचरित* लिखा। क्षेमेन्द्र का जीवनकाल 995 ई. से 1070 ई. तक है।

एक अन्य कश्मीरी कवि (मंख) ने *श्रीकण्ठचरित* नामक महाकाव्य 25 सर्गों में लिखा, जिसमें शिव द्वारा त्रिपुर के पराजय का वर्णन है। इनका समय बारहवीं शताब्दी ई. है। अन्य प्रदेशों के कवियों ने भी समय-समय पर महाकाव्यों की रचना की। नीलकण्ठ दीक्षित ने सत्रहवीं शताब्दी में *शिवलीलार्णव* महाकाव्य 12 सर्गों में लिखा। रामभद्र दीक्षित का *पतञ्जलिचरित* (आठ सर्ग), वेंकटनाथ का *यादवाभ्युदय*, धनेश्वर सूरि का *शत्रुञ्जय* महाकाव्य, वाग्भट का *नेमिनिर्माणकाव्य*, वीरनन्दी का *चन्द्रप्रभचरित*, हरिश्चन्द्र का *धर्मशर्माभ्युदय* इत्यादि महाकाव्य भी प्रसिद्ध हैं। कुछ महाकाव्य विभिन्न देवताओं तथा शास्त्रीय विषयवस्तु के निरूपण के लिए भी लिखे गए हैं। हेमचन्द्र (1088-1172 ई.) का *कुमारपालचरित* 28 सर्गों का महाकाव्य है, जिसके प्रथम 20 सर्गों में व्याकरण के नियमों के अनुसार संस्कृत भाषा के रूपों का प्रयोग दिखाया गया है और अन्तिम 8 सर्गों में प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषा के व्याकरण-सम्बद्ध रूपों का प्रयोग है। इसे *द्व्याश्रयकाव्य* भी कहते हैं।

आधुनिक युग में भी संस्कृत महाकाव्यों की रचना हो रही है। वर्तमान महापुरुषों तथा घटनाओं को विषय बनाकर अनेक महाकाव्य लिखे गए हैं। महापुरुषों में गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्रबोस, जवाहरलाल नेहरु आदि पर अनेक संस्कृत महाकाव्य लिखे गए हैं। आधुनिक काल में

2024-25

© NCERT not to be republished

प्राचीन विषयों पर भी अनेक महाकाव्य लिखे गए हैं। यही नहीं, विदेशी महापुरुष भी संस्कृत महाकाव्य के विषय बने हैं। नाटक के समान महाकाव्य भी आधुनिक संस्कृत कवियों की अत्यधिक लोकप्रिय विधा है।

ध्यातव्य बिन्दु

- ♦ महाकाव्य — सर्गबन्ध रचना
- ♦ महाकाव्य का नामकरण — कवि, कथानक अथवा नायक के नाम पर आधारित।
- ♦ कालिदास के दो प्रसिद्ध महाकाव्य–

(i) कुमारसम्भव — सर्ग-आठ, रीति-वैदर्भी।
विषय : शिव-पार्वती के विवाह तथा कुमार कार्तिकेय के जन्म की कथा।

♦ कालिदास के शृंगार रस के प्रति विशिष्ट आकर्षण का द्योतक।

(ii) **रघुवंश-** सर्ग- 19, रीति-वैदर्भी।
विषय — इक्ष्वाकुवंश के विभिन्न राजाओं का विस्तृत वर्णन,
गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता का प्रतिपादन।
रघुवंशी राजाओं के उच्च आदर्शों का द्योतन।
सभी रसों के प्रकाशक प्रसाद गुण से परिपूर्ण।

अश्वघोष के दो महाकाव्य–

(i) बुद्धचरित— सर्ग-28, उपलब्ध सर्ग-14।
विषय — भगवान् बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन।

(ii) सौन्दरनन्द— सर्ग-18, रीति- वैदर्भी।
विषय — नन्द और सुन्दरी के परस्पर अनुराग का शृंङ्गारपूर्ण वर्णन।
बुद्ध के सौतेले भाई नन्द की धर्मदीक्षा का वर्णन।
बौद्धधर्म के उपदेशों की रोचक एवं काव्यमय प्रस्तुति।

♦ किरातार्जुनीय
सर्ग—18
विषय— इन्द्रकील पर्वत पर दिव्य अस्त्र प्राप्त करने वाले अर्जुन और किरातवेशधारी भगवान् शंकर के युद्ध का वर्णन।

इस महाकाव्य के प्रसिद्ध नीतिवाक्य—

हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।
सहसा विदधीत न क्रियाम्।।

समय- छठी शताब्दी।

- रावणवध (भट्टिकाव्य)
  लेखक— भट्टि।
  समय— छठी शताब्दी का उत्तरार्द्ध एवं सातवीं शताब्दी का आरम्भ।
  विषय— रामायण की कथा का सरल एवं संक्षिप्त रूप में वर्णन।
- जानकीहरण
  लेखक— कुमारदास।
  विषय— राम की कथा पर आधारित।
  समय— छठी शताब्दी।
- शिशुपालवध
  लेखक— माघ।
  समय— 700 ई.।
  विषय— कृष्ण द्वारा शिशुपाल के वध की कथा का वर्णन।
- नैषधीयचरित
  लेखक— श्रीहर्ष।
  समय— बारहवीं शताब्दी।
  विषय— निषध देश के राजा नल एवं दमयन्ती के प्रणय का वर्णन।
- बृहत्त्रयी
  किरातार्जुनीय (भारविकृत), *शिशुपालवध* (माघकृत) एवं *नैषधीयचरित* (श्रीहर्षकृत) बृहत्त्रयी कहलाते हैं।
- हरविजय
  लेखक— रत्नाकर (कश्मीरी कवि)।
  समय— 850 ई.।
  विषय— भगवान् शिव की अन्धकासुर पर विजय का विस्तृत वर्णन।

- कप्फणाभ्युदय
  लेखक— शिवस्वामी।
  विषय—बौद्धग्रन्थ अवदानशतक की कथा पर आश्रित।
- रामायणमञ्जरी, भारतमञ्जरी और बृहत्कथामञ्जरी
  लेखक— क्षेमेन्द्र।
  विषय— प्रसिद्ध कथाओं पर आश्रित।
- दशावतारचरित
  लेखक—क्षेमेन्द्र।
  समय— 995 ई. से 1070 ई.।
- श्रीकण्ठचरित
  लेखक— मंख (कश्मीरी कवि)।
  समय—बारहवीं शताब्दी।
  विषय— शिव द्वारा त्रिपुर की पराजय का वर्णन।
  सर्ग— 25 सर्ग।
- शिवलीलार्णव
  लेखक— नीलकण्ठ दीक्षित।
  समय— सत्रहवीं शताब्दी।
  सर्ग— बारह सर्ग।
- पतञ्जलिचरित
  लेखक— रामभद्र दीक्षित।
  सर्ग— आठ।
- यादवाभ्युदय
  लेखक— वेंकटनाथ।
- शत्रुञ्जय
  लेखक— धनेश्वर सूरि।
- नेमिनिर्माणकाव्य
  लेखक— वाग्भट।

2024-25

- चन्द्रप्रभाचरित
  लेखक— वीरनन्दी।
- धर्मशर्माभ्युदय
  लेखक— हरिश्चन्द्र।
- कुमारपालचरित (द्व्याश्रयकाव्य)
  लेखक— हेमचन्द्र।
  सर्ग—28।
- द्व्याश्रयकाव्य
  ऐसा काव्य जो दो कथानकों पर आधारित हो।
- वर्तमान संस्कृत महाकाव्य
  अनेक महापुरुषों यथा गुरुगोविन्द सिंह, शिवाजी, स्वामी दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस आदि पर लिखे गए।

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. सर्गबन्ध रचना किसे कहते हैं?
प्र. 2. महाकाव्य में किन गुणों वाला व्यक्ति नायक होता है?
प्र. 3. महाकाव्य में कौन-कौन से रस प्रधान होते हैं?
प्र. 4. महाकाव्य के मंगलाचरण में किन बातों का समावेश होता है?
प्र. 5. महाकाव्य के नामकरण का आधार क्या होता है?
प्र. 6. संस्कृत महाकाव्यों के विकासक्रम में कौन-से कवियों के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं?
प्र. 7. संस्कृत कवियों में कविकुलगुरु कौन माना जाता है?
प्र. 8. कालिदास द्वारा लिखे हुए महाकाव्यों के नाम लिखिए।
प्र. 9. शिव-पार्वती के विवाह तथा कार्तिकेय के जन्म की कथा किस महाकाव्य में आती है?
प्र. 10. अश्वघोष के दो महाकाव्यों के नाम लिखिए।
प्र. 11. अश्वघोष किस शताब्दी में हुए थे?
प्र. 12. सौन्दरनन्द महाकाव्य का वर्ण्य-विषय क्या है?
प्र. 13. अश्वघोष के दोनों महाकाव्य किस रीति में लिखे गए हैं?
प्र. 14. भारवि का समय क्या माना जाता है?
प्र. 15. भारवि की रचना की कौन-सी विशेषता प्रसिद्ध है?

2024-25

प्र. 16. भारवि की रचना की किसी एक लोकोक्ति का उल्लेख कीजिए।

प्र. 17. *किरातार्जुनीय* काव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए।

प्र. 18. भट्टिकाव्य किसकी रचना है?

प्र. 19. भट्टिकाव्य का दूसरा नाम क्या है?

प्र. 20. *जानकीहरण* की कथा किस ग्रन्थ पर आधारित है?

प्र. 21. माघ का जन्मस्थान कहाँ माना जाता है?

प्र. 22. माघ ने *शिशुपालवध* काव्य में किन शास्त्रों के विषय में अपना ज्ञान प्रकाशित किया है?

प्र. 23. माघ के बाद किस महाकवि को सर्वाधिक ख्याति मिली?

प्र. 24. नल और दमयन्ती की कथा किस महाकाव्य में आती है?

प्र. 25. 'कान्यकुब्जनरेश' यह विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

प्र. 26. 'नैषधं विद्वदौषधम्' इस सूक्ति का क्या तात्पर्य हैं?

प्र. 27. बृहत्त्रयी में किन कवियों की रचनाएँ आती है?

प्र. 28. लघुत्रयी में कौन-कौन से काव्य आते हैं?

प्र. 29. *हरविजय* महाकाव्य किस कवि की कृति है?

प्र. 30. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) लौकिक संस्कृत भाषा में काव्य रचना का आरम्भ महर्षि .... से हुआ।

(ख) .... को नायक बनाकर वाल्मीकि ने आदिकाव्य प्रस्तुत किया।

(ग) महाकाव्य के उद्देश्य के रूप में धर्म .... काम और .... में से कोई एक फल होता है।

(घ) महाकाव्य में सर्गों की संख्या .... से अधिक होनी चाहिए।

(ङ) बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन... महाकाव्य में मिलता है।

(च) बुद्धचरित के वर्णन .... से समता रखते हैं।

(छ) .... भारवि की एकमात्र रचना है।

(ज) भारवि ने कथानक से अधिक .... को महत्त्व दिया।

(झ) कुमारदास का समय .... शताब्दी माना जाता है।

(ट) महाकवि श्रीहर्ष का समय .... शताब्दी है।

© NCERT not to be republished